काली चालीसा लिखी हुई

॥ दोहा ॥

जयकाली कलिमलहरण, महिमा अगम अपार ।
महिष मर्दिनी कालिका, देहु अभय अपार ॥

॥ चौपाई ॥

अरि मद मान मिटावन हारी । मुण्डमाल गल सोहत प्यारी ॥ 1 ॥
अष्टभुजी सुखदायक माता ।nदुष्टदलन जग में विख्याता ॥ 2 ॥
भाल विशाल मुकुट छवि छाजै । कर में शीश शत्रु का साजै ॥ 3 ॥
दूजे हाथ लिए मधु प्याला । हाथ तीसरे सोहत भाला ॥ 4 ॥
चौथे खप्पर खड्ग कर पांचे । छठे त्रिशूल शत्रु बल जांचे ॥ 5 ॥
सप्तम करदमकत असि प्यारी । शोभा अद्भुत मात तुम्हारी ॥ 6 ॥
अष्टम कर भक्तन वर दाता । जग मनहरण रूप ये माता ॥ 7 ॥
भक्तन में अनुरक्त भवानी । निशदिन रटें ऋषी-मुनि ज्ञानी ॥ 8 ॥
महशक्ति अति प्रबल पुनीता । तू ही काली तू ही सीता ॥ 9 ॥
पतित तारिणी हे जग पालक । कल्याणी पापी कुल घालक ॥ 10 ॥

शेष सुरेश न पावत पारा । गौरी रूप धर्यो इक बारा ॥ 11 ॥
तुम समान दाता नहिं दूजा । विधिवत करें भक्तजन पूजा ॥ 12 ॥
रूप भयंकर जब तुम धारा । दुष्टदलन कीन्हेहु संहारा ॥ 13 ॥
नाम अनेकन मात तुम्हारे । भक्तजनों के संकट टारे ॥ 14 ॥
कलि के कष्ट कलेशन हरनी । भव भय मोचन मंगल करनी ॥ 15 ॥
महिमा अगम वेद यश गावैं । नारद शारद पार न पावैं ॥ 16 ॥
भू पर भार बढ्यौ जब भारी । तब तब तुम प्रकटीं महतारी ॥ 17 ॥
आदि अनादि अभय वरदाता । विश्वविदित भव संकट त्राता ॥ 18 ॥
कुसमय नाम तुम्हारो लीन्हा । उसको सदा अभय वर दीन्हा ॥ 19 ॥
ध्यान धरें श्रुति शेष सुरेशा । काल रूप लखि तुमरो भेषा ॥ 20 ॥

कलुआ भैरों संग तुम्हारे । अरि हित रूप भयानक धारे ॥ 21 ॥
सेवक लांगुर रहत अगारी । चौसठ जोगन आज्ञाकारी ॥ 22 ॥
त्रेता में रघुवर हित आई । दशकंधर की सैन नसाई ॥ 23 ॥
खेला रण का खेल निराला । भरा मांस-मज्जा से प्याला ॥ 24 ॥
रौद्र रूप लखि दानव भागे । किये गवन भवन निज त्यागे ॥ 25 ॥
तब ऐसौ तामस चढ़ आयो । स्वजन विजन को भेद भुलायो ॥ 26 ॥
ये बालक लखि शंकर आए । राह रोक चरनन में धाए ॥ 27 ॥
तब मुख जीभ निकर जो आई । यही रूप प्रचलित है माई ॥ 28 ॥
बाढ्यौ महिषासुर मद भारी । पीड़ित किए सकल नर-नारी ॥ 29 ॥
करूण पुकार सुनी भक्तन की । पीर मिटावन हित जन-जन की ॥ 30 ॥

तब प्रगटी निज सैन समेता । नाम पड़ा मां महिष विजेता ॥ 31 ॥
शुंभ निशुंभ हने छन माहीं । तुम सम जग दूसर कोउ नाहीं ॥ 32 ॥
मान मथनहारी खल दल के । सदा सहायक भक्त विकल के ॥ 33 ॥
दीन विहीन करैं नित सेवा । पावैं मनवांछित फल मेवा ॥ 34 ॥
संकट में जो सुमिरन करहीं । उनके कष्ट मातु तुम हरहीं ॥ 35 ॥
प्रेम सहित जो कीरति गावैं । भव बन्धन सों मुक्ती पावैं ॥ 36 ॥
काली चालीसा जो पढ़हीं । स्वर्गलोक बिनु बंधन चढ़हीं ॥ 37 ॥
दया दृष्टि हेरी जगदम्बा । केहि कारण मां कियौ विलम्बा ॥ 38 ॥
करहु मातु भक्तन रखवाली । जयति जयति काली कंकाली ॥ 39 ॥
सेवक दीन अनाथ अनारी । भक्तिभाव युति शरण तुम्हारी ॥ 40 ॥

॥ दोहा ॥

प्रेम सहित जो करे, काली चालीसा पाठ । तिनकी पूरन कामना, होय सकल जग ठाठ ॥